श्रीभगवान् इस अनित्य धरा धाम पर अवतीर्ण होते हैं। श्रीधाम वृन्दावन में निवास करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने गोप सखाओं, गोपियों, व्रजवासियों तथा गोधन के साथ क्रीड़ा करके परमानन्दमय लीलारस कल्लोलिनी प्रवाहित की थी। व्रजवासी तो बस केवल श्रीकृष्ण को ही जानते थे। श्रीकृष्ण ने भी अपने पिता नन्द महाराज को इन्द्र की पूजा में प्रवृत्त नहीं होने दिया। वे इस सत्य को स्थापित करना चाहते थे कि किसी भी प्रकार की देवोपासना की कोई आवश्यकता नहीं है। जनता भगवान् की ही आराधना करे, क्योंकि उनके धाम की प्राप्ति जीवन का आत्यन्तिक लक्ष्य है।

भगवद्गीता के पन्द्रहवें अध्याय, श्लोक छः में भगवान् श्रीकृष्ण के धाम का वर्णन है—

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।

'मेरे उस स्वयंप्रकाश परम धाम को न सूर्य प्रकाशित कर सकता है, न चन्द्रमा और न अग्नि ही प्रकाशित कर सकता है। जिसे प्राप्त हुआ जीव इस संसार में फिर नहीं आता, वही मेरा परम धाम है।' (भगवद्गीता १५.६)

यह श्लोक उस सनातन धाम की सूचना देता है। हम समझते हैं कि प्राकृत आकाश की भाँति उस चिदाकाश में भी सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि होंगे। किन्तु श्रीभगवान् ने इस श्लोक में कहा है कि सनातन धाम में सूर्य, चन्द्रमा अथवा किसी भी प्रकार की अग्नि की अपेक्षा नहीं है, क्योंकि श्रीभगवान् के श्रीअंग से निस्सृत 'ब्रह्मज्योति' नामक किरणराशि से वह धाम स्वयंप्रकाश है। हम अन्य लोकों में गमन करने के लिए भीषण कठिनाइयों के मध्य भगीरथ-प्रयत्न कर रहे हैं, पर भगवद्धाम को जानना कठिन नहीं है। वह धाम 'गोलोक' कहलाता है। 'ब्रह्म संहिता' में उस का अतिशय मधुर वर्णन हैः **गोलोक एव निवसत्यखिलात्मभूतः।** श्रीभगवान् अपने गोलोक धाम में नित्य विराजमान रहते हैं। फिर भी इस संसार में भी वे प्राप्त हो सकते हैं। वास्तव में वे अवतीर्ण होकर अपना यथार्थ सच्चिदानन्द विग्रह इसीलिए प्रकट करते हैं कि उनके सम्बन्ध में हमें मनोधर्म का आश्रय न लेना पड़े। ऐसे मनोधर्म को रोकने के लिए वे श्यामसुन्दर रूप में स्वरूप-प्रकाश करते हैं। दुर्भाग्यवशात् अल्पज्ञ मनुष्य नराकार शरीर धारण करके हमारे मध्य क्रीड़ा करने के लिए अवतीर्ण हुए उन परमेश्वर का उपहास किया करते हैं। उनके नर रूप और क्रिया-कलाप के कारण उन्हें अपने समान मान बैठना भूल होगी। वस्तुस्थिति यह है कि अपनी योगमाया के द्वारा ही श्रीभगवान् अपने यथार्थ रूप को हमारे समक्ष प्रकट करके उन लीलाओं का दर्शन कराते हैं, जो उनके धाम में चल रही नित्यलीला की प्रतिमूर्ति हैं।

परव्योम की ब्रह्मज्योति में असंख्य वैकुण्ठ धाम स्थित हैं। ब्रह्मज्योति का स्रोत परम धाम कृष्णलोक है और 'आनन्दचिन्मय रस' अप्राकृत वैकुण्ठ धाम इसमें तैर रहे हैं। श्रीभगवान् की वाणी है, **न तद्भासयते सूर्यो न शशांको**